U.G. Semester-II Social Psychology.

MJC, Semester-II, Unit-2, Session 2024-28.

आत्म-सम्प्रत्यय (प्रत्यक्षीकरण) की परिभाषा (Definition of Self Concept Perception)

सिगमण्ड फ्रायड ने आत्म-प्रत्यक्षीकरण के लिए अहम् शब्द का प्रयोग किया और उसने आत्म-प्रत्यक्षीकरण को व्यक्तित्व का एक संगठित भाग माना। सिगमण्ड फ्रायड के मतानुसार अहं एक मुल्यांकन करने वाला अभिकर्त्ता है। जो बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से उन व्यवहारों को करता है जो व्यक्ति के आनन्द को अधिक तथा पीड़ा को कम बनाने में सहायक होता है।

मीड तथा सलीवन ने बोध सम्प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि व्यक्ति स्वयं को उसी रूप में प्रत्यक्ष समझता है जिस रूप में दूसरे लोग उसे देखते हैं। इसको मीड तथा सलीवन ने प्रतिम्बि मुल्यांकन का नियम कहा है।

विलियम जेम्स ने व्यक्ति बोध के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि इसमें "व्यक्ति का मन तथा शरीर, परिधान व आवास, पति-पत्नी तथा उसके बच्चे, सम्पत्ति, ख्याति आदि सम्मिलित होते हैं" इस प्रकार आत्म-सम्प्रत्यय के अनेक पक्ष या अवयव हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सभी परिभाषाएँ एकल व्यक्ति के अन्तर के विचारों, भावनाओं तथा अभिप्रेरणों के विशिष्ट संगठन पर बल देती हैं।

गॉफमैन ने छवि प्रबन्धन व रंगमंच के पात्रों के निष्पादन को रेखांकित करते हुए कहा है कि रंगमंच के कुशल कलाकारों की ही तरह सज्जन लोग भी सामाजिक अन्तः क्रियाओं में उत्तम तथा अत्यन्त उपर्युक्त निष्पादन कर सकते हैं। इसके लिए व्यक्ति को कुछ विशेषताओं को अपने व्यवहार में विकसित करना चाहिए। गॉफमैन महोदय ने व्यक्ति में निम्न चार विशेषताएँ विकसित करने की सलाह दी है।

(1) भूमिका में संसक्ति (Involvement in Role) :-

(2) सायुज्यकरण (Mystification) -

(3) वास्तविकीकरण एवं आदर्शीकरण (Realization and Idealization) :-

(4) उपयुक्त उपाग्र (Proper front) :-

(1) भूमिका में संसक्ति (Involvement in Role

→ प्रत्येक की अपनी अलग-अलग पहचान होती है। उसे अपने सामाजिक जीवन में कई अलग-अलग भूमिकाओं का

निर्वाह करना पड़ता है। जैसे:- छात्र, मित्र, पति, पिता, भाई, अध्यापक आदि। इन भूमिकाओं का कुशल निर्वाह व्यक्ति द्वारा तभी सम्भव है जब वह इन भूमिकाओं के में पूर्ण रूप से संलक्त होता है। संलक्ति के अभाव में व्यक्ति सम्बन्धित भूमिका के सूक्ष्म पक्षों को समझ नहीं पाता। फलतः वह श्रेष्ठ भूमिका नहीं कर सकता।

(2) सायुज्यकरण (Mystification) :→ कुछ भूमिकाएँ इस प्रकार की होती हैं कि उनमें अन्तःक्रिया करते समय कर्ता व लक्षित सहभागियों के मध्य एक निश्चित सीमा तक दूरी बनाये रखना आवश्यक होता है। ऐसी भूमिकाओं में पूर्ण संलक्ति के साथ औपचारिक व्यवहार ही उत्तम समझे जाते हैं, जिस कारण व्यक्ति अपनी भूमिका का प्रभावशाली निष्पादन नहीं कर पाता है।

(3) वास्तविकीकरण एवं आत्मीकरण (Realization and Internalization) :→ व्यक्ति द्वारा किसी भी भूमिका का निर्वाह करके आकर्षक तथा श्रेयस्कर छवि प्रक्षेपित करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि व्यक्ति को इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञात होना चाहिए कि समाज की व्यक्ति से क्या अपेक्षाएँ हैं? भूमिका निर्वाह में इस ज्ञान का होना अत्यन्त आवश्यक है।

(4) उपयुक्त उपाग्र (Proper Front) :- गॉफमैन के शब्दों में उपाग्र वह है जो प्रथम छवि का आधार प्रस्तुत करता है। उपाग्र के तीन अवयव होते हैं:- परिवेश, निजीपरिवेश तथा दिखावट एवं तौर-तरीके। परिवेश में - व्यक्ति का आवास तथा उसकी स्वच्छता, निजी परिवेश - में व्यक्ति की वेशभूषा, उसका व्यवसाय, तथा दिखावट व तौर-तरीके के अन्तर्गत - केशविन्यास, मुख की आकृति, खड़े होने का तरीका आदि शामिल हैं। श्रेष्ठ छवि में प्रबंधन के दृष्टिकोण से विभिन्न प्रकार के पेशों में कार्यरत व्यक्तियों, जैसे:- चिकित्सकों, प्राध्यापकों तथा अधिवक्ताओं के लिए उपर्युक्त उपाग्र का होना अत्यन्त आवश्यक है।

आत्म-अभिव्यक्ति (Self Expression)

कोई व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं, अभिवृत्तियों तथा रुचियों को एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के समक्ष एक सीमा से ही प्रकट कर सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने विषय में किसी दूसरे व्यक्ति को उतना ही बताता है जितना कि अपनी श्रेष्ठ छवि बनाने के लिए आवश्यक हो। कई स्थितियों में आत्म अनावरण नहीं किया जाता है क्योंकि अनावृत पक्षों की जानकारी को लेने वाला व्यक्ति उसका

दुरुपयोग करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है जिसके कारण उस व्यक्ति में समाज द्वारा अस्वीकृत कर दिये जाने की ~~आशंका~~ आशंका उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्ति की कई भावनाएँ, सांवेगिक अनुभव तथा विचार ऐसे होते हैं जो अंतरंग होने के बाद भी अभिव्यक्त हो जाते हैं। दूसरे लोगों के साथ अंतरंग भावनाओं तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान ही आत्म-अनावरण कहलाता है। डेलेगा तथा ग्रजलेक (1974) के अनुसार आत्म-अनावरण आवश्यक होता है। इससे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इसके निम्न पाँच उद्देश्य प्रमुख हैं।

(1) आत्म-स्पष्टीकरण (Self Clarification) :- जब दो व्यक्ति आपस में एक दूसरे से अपनी अंतरंग समस्याओं, भावनाओं तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं तो ऐसी स्थिति में दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। आपस में एक-दूसरे की समझ अत्यधिक गहरी हो जाती है। तथा अपने बारे में भी अधिक स्पष्टता या जानकारी प्राप्त हो जाती है।

(2) सामाजिक वैधीकरण (Social Validation) :- जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करता है तो दूसरा व्यक्ति उस व्यक्ति के विचारों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है। उस प्रतिक्रिया के आधार पर व्यक्ति बहुत ही सरलता से यह निर्धारित कर सकता है कि उसके विचार सामाजिक दृष्टि से उचित हैं या नहीं।

(3) आत्म अभिव्यक्ति (Self Expression) :- आत्म-~~अभिव्यक्ति~~ अभिव्यक्ति से तात्पर्य ऐसे सांवेगिक अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने से है जो उसे दुःख एवं तनाव की स्थिति प्रदान करते हैं तथा मन को बेचैन कर देते हैं। ऐसे अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के सामने व्यक्त करने से मन हल्का तथा स्वच्छ हो जाता है।

(4) सामाजिक नियंत्रण (Social Control) :- अन्तःक्रिया जगत में नियंत्रण रखने के उद्देश्य से व्यक्ति अपने अंतरंग विचारों, विचारों तथा अनुभवों को छिपाये रखता है तथा सिर्फ ऐसे विचारों तथा अभिवृत्तियों को विस्तृत रूप से व्यक्त करता है जिसके फलस्वरूप समाज में उपस्थित व्यक्तियों की नजरों में उसकी छवि और अधिक आकर्षक बने।

(5) सम्बन्ध विकास (Relationship Development) → दूसरे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध का प्रारंभ करने तथा उसे अंतरंग बनाने के लिए व्यक्तिगत सूचनाओं एवं निजी विचारों को प्रकट करना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तरीका है। प्रेम सम्बन्ध में व्यक्ति अपने जीवनवृत्त के आदान-प्रदान से प्रारंभ कर सामान्य अभिरुचियों अभिवृत्तियों एवं कामनाओं की जानकारी ~~प्राप्त~~ प्राप्त करता है।

आत्म-अनावरण अंतरंग स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण पद्धति है। ऐसा करने में अंतरंगता में वृद्धि होती है। कभी-कभी ऐसे अनावरण में अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाती है। बेलेरियन डर्लेगा (1984) ने बताया कि आत्म-अनावरण से अनेक प्रकार के सामाजिक संकट उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार उसके द्वारा चार प्रकार के संकट प्रमुख हैं।

(1) नियंत्रण की हानि (Loss of Control) :— अंतरंगता के सम्बन्ध में व्यक्ति अपनी बहुत-सी कमजोरी अपने मित्र को बता देता है, जिसका दुरुपयोग करके उसका मित्र उसे हानि पहुँचाता है तथा उस पर वह अपनी प्रभाविता स्थापित कर उसे अपने नियंत्रण में रखता है जबकि अनावृत करने वाला व्यक्ति दूसरे पर अपना नियंत्रण खो देता है।

(2) अनिच्छा (Indifference) :— किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कोई व्यक्ति वैयक्तिक सूचनाओं का सर्वप्रथम आदान-प्रदान करता है। कभी-2 दूसरा व्यक्ति अन्योन्याता की प्रतिक्रिया करता है तथा एक-दूसरे से अंतरंगता विकसित होती है। कभी-कभी दूसरा व्यक्ति किसी की निजी सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद सम्बन्ध स्थापित करने में अनिच्छा प्रदर्शित कर सकता है, क्योंकि अनावृत्त सूचना को व्यक्ति का अशोभनीय गुणधर्म माना जाता है।

(3) विश्वासघात (Betrayal) :— व्यक्ति कभी-2 अपने मित्रों को अपने से सम्बन्धित गोपनीय सूचनाएँ बता देता है तथा उस पर पूर्ण विश्वास रखता है कि उसका मित्र उसके द्वारा दी गयी सूचना को किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बतायेगा। ऐसी स्थिति में कभी कोई मित्र उसके साथ विश्वासघात करते हुए सूचना किसी अन्य व्यक्ति को बता सकता है।

(4) अस्वीकृत (Non-acceptance) :— व्यक्ति के निजी जीवन से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी से सम्भव है कि लोग उसे अस्वीकार कर दें।

=x—